राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

बी.पी.ए. तृतीय वर्ष नियमित/स्वाध्यायी पाठ्यक्रम

विषय कोड	क्रेडिट
EO-BMVI-303	3
क्लास रूम टिचिंग साप्ताहिक अवधि/घंटे	टोटल टिचिंग अवधि/घंटे
6	216

(खण्ड.ब) इलेक्टिव ओपेन सब्जेक्ट

केवल प्रायोगिक - स्किल डेवलपमेंट-

एन.एस.एस/एन.सी.सी./शरीरिक शिक्षा/योग/

फील्ड वर्क के साथ अपने विषय के अपोजिट विषय का चुनाव

मिड टर्म/ आन्तरिक मूल्यांकन + उपस्थिति	एण्ड टर्म मूल्यांकन प्रतिशत अंक	स्वाध्यायी एवं टोटल अंक प्रतिशत	उत्तीर्णांक न्यूनतम अंक प्रतिशत
15+05	80	100	33

प्रायोगिकः- प्रदर्शन एवं मौखिक

सुगम संगीत प्रायोगिक

<u>उद्देश्य</u> - इलेक्टिव पाठ्यक्रम (बी) सुगम संगीत का पाठ्यक्रम इस उद्देश्य से बनाया गया है जिससे विद्यार्थियों को सुगम शास्त्रीय और सुगम संगीत विधाओं के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराया जा सके | यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों में इन विधाओं के विषयगत सैद्धांतिक और प्रायोगिक पक्ष के विभिन्न घटक तत्वों की संतुलित रूप से समझ पैदा करने की दिशा में सहायता करने के लिए रखा गया है लेकिन परीक्षा केवल प्रायोगिक होगी i आन्तरिक मूल्यांकन में सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक दोनों से प्रश्न पूछ सकते हैं |

मौखिक –

1. (अ) भारत में प्रचलित दो संगीत पद्धतियों (हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक) का अध्ययन | उनकी समानताएँ और असमानताएँ |

   (ब) निम्नलिखित का संक्षिप्त अध्ययन – संगीत, नाद, श्रुति,स्वर, वर्ण |

2. (अ) गीत तथा भजन गीत विधाओं का सामान्य परिचय |

   (ब) पाठ्यक्रम के गीत, भजन तथा ग़ज़ल का भावार्थ लिखने का अभ्यास|

   (स) निम्नलिखित तालों को भातखंडे ताललिपि में लिखने का अभ्यास - त्रिताल, दादरा और कहरवा [केवल ठाह]

3. निम्नलिखित संगीत वाद्यों का सचित्र वर्णन – हारमोनियम, तबला और ढोलक |

4. निम्नलिखित के जीवन परिचय का अध्ययन –मिर्ज़ा ग़ालिब, महादेवी वर्मा और मीरा बाई |

5. लगभग 200 शब्दों में सुगम संगीत सम्बन्धी विभिन्न विषयों पर निबंध लेखन |

प्रायोगिक -

1. आकाशवाणी द्वारा अनुमोदित रचनाकारों के गीत, ग़ज़ल और भजन में से प्रत्येक विधा की दो-दो रचनाओं (कुल छः) का अभ्यास |
2. थाट बिलावल और कल्याण में अलंकारों का अभ्यास |
3. भारत के किसी एक क्षेत्र के एक लोकगीत का अभ्यास |
4. राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत (आकाशवाणी द्वारा अनुमोदित राग देस पर आधारित) के गायन का अभ्यास |
5. हाथ से ताली-ख़ाली देकर निम्नलिखित तालों का ठाह में अभ्यास – त्रिताल. दादरा और कहरवा |